पाठ 10

छोटा जादूगर

कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था। उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुर्ते के ऊपर से एक मोटी–सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकृष्ट हुआ। उसके अभाव में भी संपूर्णता थी। मैंने पूछा ,''क्योंजी तुमने इसमें क्या देखा?''

''मैंने सब देखा है! यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ। उसने बड़े विश्वास में कहा, उसकी वाणी में कहीं भी बनावट नहीं थी। मैंने पूछा ''और उस पर्दे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?''

''नहीं, वहाँ मैं न जा सका। टिकट लगता है।'' मैंने कहा, ''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ।'' मैंने मन ही मन कहा, ''भाई आज के तुम्हीं मित्र रहे।'' उसने कहा, ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए, निशाना लगाया जाए।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा, ''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।'' उसने स्वीकार सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, ''तुम्हारे परिवार में और कौन–कौन हैं?''

''माँ और बाबूजी।''

''उन्होंने तुमको वहाँ जाने के लिए मना नहीं किया?''

''बाबू जी जेल में हैं।''

''क्यों?''

''देश के लिए।'' वह गर्व से बोला।

''और तुम्हारी माँ?

''वह बीमार है।''

''और तुम तमाशा देख रहे हो?''

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा, ''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

मैं आश्चर्य से उस तेरह–चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

''हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी! माँ बीमार हैं, इसीलिए मैं नहीं गया।''

''कहाँ?''

''जेल में। जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की सेवा करूँ और अपना पेट भरूँ।''

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों तरफ बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मैं व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा, ''अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।''

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ जेब में कुछ मेरे रूमाल में रख लिये गए।

लड़के ने कहा, ''बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए, मैं चलता हूँ।'' वह नौ दो ग्यारह हो गया। मैंने मन ही मन कहा, ''इतनी जल्दी आँखें बदल गईं।''

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर–उधर टहलता, देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर–नीचे आना–जाना देखने लगा। अकस्मात किसी ने ऊपर हिंडोले से पुकारा, ''बाबूजी!''

मैंने पूछा, ''कौन?''

''मैं हूँ छोटा जादूगर।''

कलकत्ता के सुरम्य वनस्पति उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी–सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने का खादी का झोला, साफ जाँघिया और आधी बाँहों का कुर्ता, सिर पर मैला रूमाल सूत की रस्सी से बँधा था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ कहने लगा, ''बाबूजी नमस्ते। आज कहिए तो खेल दिखाऊँ?''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।'' '' फिर इसके बाद क्या गाना–बजाना होगा, बाबू जी?''

''नहीं जी, तुम को.....क्रोध से मैं कुछ और कहने ही जा रहा था, तभी श्रीमती ने कहा, ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए भला कुछ मन तो बहले''। मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमती जी की वाणी में वह माँ की–सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरंभ किया।

उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते–हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था, बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया है। यही तो संसार है। ताश के सब पत्ते लाल हो गए, फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े–टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने आप नाच रहे थे। मैंने कहा, ''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।''

श्रीमती जी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल पड़ा। मैंने कहा, ''लड़के!''

''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा, ''अच्छा तुम इस रुपये से क्या करोगे?''

''पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कंबल लूँगा।'' मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा, ''ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं, उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न!''

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता–कुंज देखने के लिए चल दिए। इस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। शांत वातावरण था। हम लोग धीरे–धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे। रह–रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा, ''तुम यहाँ कहाँ''?

''मेरी माँ यहीं है ना। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।'' मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी। छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा, ''माँ'' मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने कार्यालय में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया था। फिर भी चलते–चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता तो और भी..... । मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्दी लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मैं मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता नहीं थी। वह जब औरों को हँसाने की

चेष्टा कर रहा था, तब जैसे वह स्वयं काँप जाता था, मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल समाप्त हो जाने पर पैसे बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण–भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

माँ ने कहा कि ''आज तुरंत चले आना। मेरी अंतिम घड़ी समीप है।'' अविचल भाव से उसने कहा।

''तब भी तुम खेल दिखाने चले आए।'' मैंने कुछ क्रोध से कहा। ''मनुष्य के सुख–दुख के माप का अपना ही साधन होता है। उसी के अनुपात से वह तुलना करता है।''

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी। उसने कहा, ''क्यों न आता?'' और कुछ अधिक कहने में अब वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षणभर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा, जल्दी चलें। मोटर वाला मेरे बताए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़ी के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़ी में माँ–माँ पुकारते हुए घुसा। मैं पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से ''बे....'' निकलकर रह गया, उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था। मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू–सा मेरे चारों और नृत्य करने लगा।

–जयशंकर प्रसाद

शब्दार्थ

कार्निवाल	–	मेला	विषाद	–	उदासी / गम
तिरस्कार	–	उपेक्षा	चेष्टा	–	प्रयास
कलनाद	–	मीठी आवाज़	संपूर्णता	–	पूरापन
निर्मल	–	स्वच्छ	उद्यान	–	बगीचा
अस्ताचलगामी	–	अस्त होने वाला, सूर्यास्त होना	स्तब्ध	–	हैरान

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. छोटे जादूगर ने मेले में क्या–क्या देखा?
2. छोटा जादूगर पर्दे के पीछे क्यों नहीं गया था?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. छोटे जादूगर के पिता उन दिनों थे–
   (क) शहर में (ख) जेल में (ग) कार्निवाल में (घ) खेत में ( )
2. छोटा जादूगर अपनी माँ के लिए ले जाना चाहता था–
   (क) उपहार (ख) धन (ग) साड़ी (घ) पथ्य ( )
3. ''मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।'' इस कथन से छोटे जादूगर के व्यक्तित्व के किस पहलू का पता चलता है –
   (क) स्वार्थीपन का
   (ख) याचना की प्रवृत्ति का
   (ग) माँ के प्रति कर्तव्य निर्वाह का
   (घ) खाने–पीने की प्रवृत्ति का

अति लघूत्तरात्मक

1. छोटा जादूगर किसको कहा गया है ?
2. छोटे जादूगर ने कितने खिलौनों पर गेंद से निशाना लगाया ?

लघूत्तरात्मक

1. छोटे जादूगर के पिता जेल क्यों गए ?
2. लेखक की पत्नी ने छोटे जादूगर से क्या कहा ?
3. छोटे जादूगर का खेल उस दिन क्यों नहीं जमा ?

दीर्घ उत्तरात्मक

1. लेखक ने छोटे जादूगर की झोंपड़ी में क्या देखा ?
2. कहानी के आधार पर छोटे जादूगर की दशा का वर्णन कीजिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–
   लोट–पोट होना अंतिम घड़ी समीप आना

नौ दो ग्यारह होना आँखें बदलना

2. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

कर्ण, दुग्ध, नृत्य, रात्रि

3. निम्नलिखित शब्दों का उनके सामने लिखे अर्थ से मिलान कीजिए–

जैसे–	तिरस्कार	–	उपेक्षा
	समग्र		बंदीगृह
	स्वीकार		रास्ता
	पथ		आवास
	कारावास		मंजूर
	निकेतन		पूरा

पाठ से आगे

1. छोटे जादूगर की माँ अपने पुत्र के बारे में क्या सोचती होंगी ?
2. छोटे जादूगर के स्थान पर आप होते तो माँ के लिए क्या–क्या करते और कैसे?

यह भी करें

1. क्या आपने कभी जादू का खेल देखा है। एक जादूगर कौन–कौनसे खेल दिखाता है? अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।
2. छोटे बच्चों को विभिन्न प्रकार के कामों में लगाना बालश्रम कहलाता है। बाल मजदूरी कानूनी तौर पर मना है। क्या इस कहानी में छोटे बालक का खेल दिखाना उचित माना जाएगा? अपनी कक्षा में इसकी चर्चा करें।

यह भी जानें

जयशंकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर' कहानी का मुख्य पात्र एक तेरह–चौदह वर्षीय किशोर है। प्रेमचंद द्वारा रचित 'ईदगाह' कहानी का मुख्य पात्र भी एक बालक है। अपने विद्यालय के पुस्तकालय से 'ईदगाह' तलाश कर पढ़िए।

तब और अब

पुराना रूप	उद्यान	दिनाङ्क	ठण्डा
मानक रूप	उद्यान	दिनांक	ठंडा

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

माँ की ममता दुनिया के लिए ईश्वर का आशीर्वाद है।